जीन पियाजे के अनुसार ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया —

पियाजे के अनुसार ज्ञान एक सक्रिय प्रक्रिया है। वातावरण में उपलब्ध पदार्थों के साथ जब व्यक्ति (बालक) अन्तर्क्रिया द्वारा अनुभव प्राप्त करते हैं तब इसकी परिचर्या अपने सहपाठियों (साथियों) से करने पर अधिगम होता है।

संज्ञानात्मक प्रक्रिया (Cognitive Process)

संज्ञानात्मक प्रक्रिया वह अदृश्य मानसिक क्रियाएं हैं जिनमें संरचनाएं प्रभावित होकर पूर्व स्थिति संरचना में सम्मिलित हो जाती है।

व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि उसकी संज्ञानात्मक संरचना, व्यक्ति एवं वातावरण के बीच अन्तर्क्रिया का फल है।

DATE / /
PAGE NO.

पियाजे का मत है कि वस्तुतः संज्ञानात्मक संरचना एक व्यक्ति के ज्ञान का दूसरा नाम है।

ज्ञानात्मक विकास के निम्न स्तरों को पियाजे ने अपने निम्न सिद्धान्तों में वर्णन किया है।

1- मन्तव्य या स्कीम (Schemes)
2. आत्मसात करण (Assimilation)
3. व्यवस्थापन (Accommodation)
4. इक्विलीब्रेशन (Equilibration)

1- मन्तव्य या स्कीम —

पियाजे ने उन व्यवहार के प्रतिमानों को स्कीम कहा है। जो बालक और युवा संसारी वस्तुओं के साथ अपने कार्यों में प्रयोग करते हैं स्कीम सरल हो सकते हैं जैसे जब कोई वस्तु उसके पहुँच में हो उसे कैसे पकड़ा जाता है अथवा जटिल हो सकते हैं जैसे गणित की कठिन समस्याओं को हल करना।

Scanned with CamScanner

पियाजे के अनुसार संगठन स्कीम बनाने की प्रक्रिया है एवं स्कीम मानसिक प्रतिमान या प्रणाली है जो यह वर्णन करते हैं कि किस प्रकार व्यक्ति संसार के सम्बन्ध में चिन्तन करते हैं।

आत्मसातकरण अथवा एसीमीलेशन :-

दूसरी अवधारणा जिसका प्रयोग पियाजे ने किया है वह 'एसीमिलेशन' है। यह उस समय होता है जबकि बालक एक स्कीम का प्रयोग नयी वस्तु पर करता है। स्कीम पीट मारना, लुढ़काना या पटकना हो सकती है।

इस प्रकार एसीमीलेशन में नवीन सूचना के साथ-साथ उसका प्रस्तुत स्कीम के साथ समावेश होना जरूरी है।

Scanned with CamScanner